॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे परमदेव! तू कल्याण करने वाला है। तू हमारा ही नहीं सँसार का कल्याण करने वाला है। आज सँसार में प्रत्येक मानव, प्रत्येक देव कन्या के हृदय में उस उज्ज्वलता को दें जो आपने सृष्टि के प्रारम्भ में प्रत्येक वेद मन्त्र द्वारा हमें प्रेरणा दी है। उस प्रेरणा को पुनः से जागृत कर। विधाता! आपने सृष्टि का निर्माण किया और सर्वप्रथम मानव के लिए ज्ञान का स्त्रोत दिया, उस आनन्द के स्त्रोत को आज भी दे। किसको दे? महान् पात्रों को दे। आज हमारे हृदय को पवित्र बना, जिससे हम सँसार में उज्ज्वल बनें विधाता! जब आपकी कृपा होगी तो हम आपकी दया के पात्र बनेंगे। हे भगवन्! तू दया कर और इतनी दया कर कि हमारी आत्मा के द्वारा कोई दोष न आए। विधाता! जब हमारी आत्मा के द्वारा नाना प्रकार के दोष आ जाएँगे, तो हमारा जीवन, जीवन न रहेगा। प्रभु! दया कर।

हे प्रभु! हम कैसे अभागे हैं सँसार में। मैं तो भगवन्! वह कर्म करना चाहता हूँ जिस कर्म को करके प्रभु! मैं तुम्हारी गोद में आ जाऊँ। भगवन्! मैंने आज से पूर्व काल में जो पाप किया है उसे क्षमा करो। आज मैं क्षमा चाहता हूँ। प्रभु! तू आज मुझे अपना और अपनाकर अपनी गोद में ले।

हे भगवन्! तू यज्ञ को देने वाला है, प्रेरणा देने वाला है, भगवन्! वह प्रेरणा दो, जिससे हम अपना और इस सँसार का कल्याण कर सकें। जब विधाता की दया होती है तो हमारी आन्तरिक भावना उज्ज्वल और पवित्र हो जाती है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 561 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 636
वर्ष : 47 44 समग्र वर्ष : 53

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. देवताओं की धरोहर	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-21
4. श्रावणी पर्व	पूज्यपाद-गुरुदेव	22-38
5. ऋषियों के उद्‌गार		39
6. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		40-42

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेदमन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है–

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.) **PAN No. – AAAAV7866J**

पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली

बैंक खाता नं. - 0149000100229389, IFSC Code – PUNB–0014900

website : www.shringirishi.in

Email : contact@shringirishi.in

॥ ओ३म् ॥

देवताओं की धरोहर

जीते रहो!

देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं और जितना भी ये जड़ जगत अथवा चेतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वे परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं। हमारे यहाँ वैदिक आचार्यों ने जब जड़ और चेतना की मीमाँसा करना प्रारम्भ किया तो मानो चेतना के स्वरूप में आत्मा प्रतीत हुई और जितना भी ये जड़ जगत है, मानो इसमें गति भी हो और पिण्ड रूप में ये ब्रह्माण्ड दृष्टिपात आता रहता है। और चेतना के स्वरूप में आत्मा और ज्ञान व प्रयत्न उसके समक्ष रहता है। तो **चेतना में ज्ञान और प्रयत्न है और ये जो जड़वत् ब्रह्माण्ड है अथवा जगत है उसमें केवल पिण्ड है, गति है परन्तु ज्ञान व प्रयत्न से शून्य होने से यह जगत जड़वत् कहलाया गया।** तो इसीलिए हमारे आचार्यों ने इसकी विवेचना करते हुए कहा है कि जितना भी ये जड़ जगत और चेतन्य जगत है, परन्तु वो परमपिता परमात्मा दोनों प्रकार के जगत में निहित रहता है। मानो वो जड़वत् में भी और चेतना में भी विद्यमान है। इसीलिए हमारे यहाँ आचार्यों ने कहा है कि वो परमपिता परमात्मा जो सर्वज्ञ है और जड़ व चेतना में सबमें निहित रहने वाला है। हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा और उसकी अनन्तमयी आभा को जानने के लिए हम सदैव तत्पर रहें। क्योंकि हमारे

यहाँ वैदिक साहित्य वालों ने अथवा प्रत्येक वेद मन्त्रों में उस परमपिता परमात्मा की गाथा गाने के लिए मानव सदैव तत्पर रहा है और उसी की गाथा गाते रहते हैं। क्योंकि प्रत्येक वेद मन्त्रः उस परमपिता परमात्मा की महिमा का प्रायः वो बखान करता रहता है और उद्गीत गाता रहता है। तो इसीलिए हमारे यहाँ मेरे पुत्रों! उस परमपिता परमात्मा को वसुन्धरा के रूप में वर्णित किया गया।

वसुन्धरा

वसुन्धरा उसे कहते हैं जिसके गर्भस्थल में हम सब विद्यमान रहते हैं। तो वह माता वसुन्धरा कहलाती है, हम उसमें बसते हैं। हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में जब वसुन्धरा के ऊपर बेटा! कुछ वेद मन्त्रों का उद्गीत गाया गया तो उन्होंने बेटा! वसुन्धरा के रूप में उनके पर्यायवाची शब्दों को जब अपने में लाने का प्रयास किया तो उन्होंने उस परमपिता परमात्मा को वसुन्धरा के रूप में वर्णित किया गया है। और जहाँ वे परमपिता परमात्मा वसुन्धरा हैं वहीं माता का नाम भी वसुन्धरा कहा जाता है। और जहाँ ये माता वसुन्धरा माता, वहाँ पृथ्वी माता को भी वसुन्धरा के रूप में वर्णन किया गया है। तो मुनिवरों! देखो, वसुन्धरा का अभिप्राय यह है कि इसके गर्भ में हम सब वशीभूत रहते हैं अथवा बसते हैं उसी का नाम वसुन्धरा कहा जाता है। तो मेरे प्यारे देखो यहाँ माता का नाम वसुन्धरा है जिसके गर्भस्थल में मुनिवरों! देखो हम सब मानो देखो विद्यमान रहते हैं।

शिशु का लोक

जब माता के गर्भस्थल में हम जैसे शिशु विद्यमान होते हैं, तो माता के गर्भस्थल में पालन हो रहा है, परन्तु वह बाल्य शिशु उसी में वशीभूत है। मेरे पुत्रों! देखो, माता से यदि हम यह प्रश्न करते हैं कि हे मातेश्वरी! तेरे गर्भस्थल में कौन बस रहा है परन्तु देखो वह कहती है, शिशु बस रहा

है। क्या वह शिशु को निर्माणित करने वाला, उसकी अस्थियों को निर्माणित कौन कर रहा है। बेटा! माता निरुत्तर हो जाती है। क्योंकि माता उन अङ्गों को जानती नहीं है। परन्तु देखो, जब वैदिक साहित्य में वेद मन्त्र स्मरण आने लगता है तो वेद मन्त्र कहता है वसुन्धरम् ब्रह्मणे देवत्वाम् लोकप्रव्हा, वेद का वाक्य कहता है कि लोकों के, लोक में रमण करता है और देवताओं के संरक्षण में मानो देखो वो रक्षा को प्राप्त करता है। मेरे प्यारे देखो ये विचार आते हुए, ऋषि-मुनियों ने कहा है क्या **माता के गर्भस्थल में जब शिशु होता है तो माता का गर्भाशय उसका लोक कहलाता है।** जैसे पञ्च महाभूत आत्मा का लोक कहा जाता है इसी प्रकार वह माता का गर्भाशय मानो एक लोक कहलाता है। उसमें वो बसता है। लोक का अभिप्राय है जहाँ वो अपना वास कर रहा है। मेरे पुत्रों! देवताओं का संरक्षण कैसा है, ये विचार आता है बेटा! सर्वत्र देवता उसे अपनी सहायता देना प्रारम्भ करने लगते हैं।

देवताओं के संरक्षण में शिशु का पालन

मेरे प्यारे! माता के गर्भस्थल में जब हम जैसे शिशु विद्यमान होते हैं तो मेरे प्यारे! देखो देवताजनों का वहाँ वास हो जाता है। शिशु के प्रवेश होते ही बेटा! देखो चन्द्रमा अमृत देना प्रारम्भ कर देता है और सूर्य प्रकाश देता है। देखो, पृथ्वी गुरुत्व देना प्रारम्भ कर देती है और देखो यह जल आपो बन करके जैसे यज्ञशाला में यजमान विद्यमान हो करके, और वह तीन आचमन करता है, और आचमन करता हुआ कहता है, मुनिवरों! सबसे प्रथम वह अमृतम् ब्रव्हे, मेरे प्यारे! देखो आपो ही हमारा ओढ़न है, आपो ही हमारा बिछोना है और आपो ही मुनिवरों! देखो पासे बने हुए हैं। मेरे पुत्रों! माता के गर्भस्थल में व माता ब्रह्मणे, देखो शिशु का जो ओढ़न है वह जल है और आसन भी जल ही है। और जो मानो देखो पासे बने हुए हैं वह भी जल कहलाते हैं, आपो कहलाते हैं। मेरे पुत्रों! देखो, उसमें वो वास करता रहता है।

आपाम् ब्रह्मणे आपाम् लोकम् ब्रव्हा, **मेरे पुत्रों! वही तो आपो है जिसके संरक्षण में मानो हम सदैव पनपते रहते हैं।** तो मेरे प्यारे! देखो, आगे ऋषि कहता है आचारास्सुतम् बृव्हे। मेरे पुत्रों! देखो जैसे आपो, मानो देवता बन करके हमारी रक्षा कर रहा है इसी प्रकार मुनिवरों! देखो **अग्नि उसे उष्ण बनाती है,** अग्नि ही तो उष्ण बनाने लगती है। और अग्नि ही मेरे पुत्रों! देखो, अग्नम् ब्रह्मणा वृतम देवाः, वह ही अग्नि मेरे प्यारे! उसे धीमा-धीमा उष्ण बनाती रहती है, वो पनपता रहता है। मेरे पुत्रों! देखो उषम् बृहा व **वायु उसे प्राण देने वाला है,** वायु से ही तो प्राण आता है। मेरे प्यारे! देखो वायु से प्राण आता है, अपान आता है, उदान आता है, समान आता है और व्यान आता है। ये पञ्च, मानो पाँचों प्राण आते हैं और वे प्राण अपनी-अपनी क्रियाओं में उसे रत्त, अपनी-अपनी आभा में रत्त होने लगते हैं। मेरे पुत्रों! वो क्रिया करने लगते हैं। मेरे पुत्रों! देखो, उसी के उपरान्त पाँच प्राणों का प्रार्दुभाव, उसी में से पाँच प्राणों का प्रार्दुभाव, इसे नाग, देवदत्त धनञ्जय, कुरू और कृकल मेरे पुत्रों! देखो ये पाँच प्राण कहलाते हैं। ये पाँचों प्राण, पाँच प्राण, पाँच उपप्राण, तो मेरे पुत्रों! देखो, ये शरीर में वास कर जाते हैं। अपनी-अपनी आभा में गतिवान् गति करने लगते हैं। मेरे पुत्रों! देखो, प्राण आता है और गमन करता है। आनन्दमब्रहे, मेरे पुत्रों! जब वह प्राण आता है अरबों खरबों परमाणुओं को ले करके वह बाह्य जगत में जाता है और अरबों खरबों को आन्तरिक जगत में प्रवेश करा देता है। मेरे प्यारे! वह प्राण सखा कहलाता है। और वह प्राण का प्रतिनिधि मानो देखो ये वायुतम् ब्रह्मे, वायु ही तो गति देने वाला है और **जहाँ वो भ्रमण करता है उसे बेटा! अवकाश कहते हैं।** वाह रे मेरे प्रभु! तू कितना विज्ञानवेत्ता है। जब तेरे विज्ञान की महिमा का बखान हम करने लगते हैं तो तेरा यह संसार एक विज्ञानमयी दृष्टिपात आने लगता है। परन्तु यदि कोई वैज्ञानिक

माता के गर्भस्थल के ऊपर अन्वेषण करना जब प्रारम्भ करने लगता है तो सर्वत्र विज्ञान की उसे अनुभूति होने लगती है।

मेरे पुत्रों! देखो वह प्राण ब्रह्माः वेद का आचार्य कहता है, **वेद मन्त्र भी कहता है क्या वह माता के गर्भस्थल में शिशु पनपता रहता है और देवताओं के संरक्षण में रहता है।** मेरे पुत्रों! वह माता के गर्भ में वास करता है। उसी में बस रहा है और देखो **अन्तरिक्ष उसे अवकाश देता है जहाँ वह मानो कुछ क्रिया करता है।** क्रीड़ा करता रहता है। अपनी नस-नाड़ियों के द्वारा ही मुनिवरों! देखो अपने में **माता के गर्भस्थल में बेटा! चन्द्रमा से अमृत आता है।** अमृत कैसे आता है और बेटा! आचार्य कहते हैं कि माता की रसना के निचले विभाग में एक चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी कहलाती है और उस नाड़ी का सम्बन्ध मानो माता की पुरातत्त्व नाम की नाड़ी से होता है और पुरातत्त्व नाम की नाड़ी का समन्वय माता की लोरियों से होता है। और लोरियों से बेटा! पञ्चम् नाड़ी बन करके चलती है, उनमें कुछ चन्द्रमा का अमृत बह रहा है। माता के गर्भस्थल में जो नाभि है परन्तु नाभि का और बाल्य की नाभि का दोनों का समन्वय रहता है। मानो देखो उन्हीं के द्वारा वह, नस नाड़ियों के द्वारा अमृत को पान कर रहा है। वाह रे मेरे प्रभु! तू विज्ञानवेत्ता है, महान् है और पवित्रतम् कहलाता है। जब तेरे विज्ञान के ऊपर विचार-विनिमय करते हैं तो हमारा अन्तर्हृदय गद्गद् हो जाता है। और मैं ये कहा करता हूँ हे परमात्मन्! तुम्हारा यह विज्ञान कितना महान् और सर्वोपरि कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो यह चन्द्रमा अमृत दे रहा है। और जिस प्रकार यह अमृत देता है इसी प्रकार यह जो सूर्य है, मानो यह प्रकाश देने वाला है। यह प्रकाश देता है तो बेटा! कैसा अनुपम प्रकाश है। मानो देखो वह **मस्तिष्क के द्वारा, ब्रह्मरन्ध्र के द्वारा, मेरे प्यारे देखो अदिति का प्रकाश गमन करता है।** और वह प्रकाश ऊर्ज्वा के रूप में भी गमन करता है। **मेरे पुत्रों! देखो ऊर्ज्वा को पान कराने वाला ही तो अदिति है।** वही तो अदिति है जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से बेटा! अन्वेषण करता

रहा है, अनुसन्धान करता रहा है और विचारता रहा है वो कैसा पवित्र अदिति कहलाता है। जिस अदिति से हमें मानो देखो प्रकाश प्राप्त होता है। जिससे हमें, मेरे प्यारे! देखो ये दिवस और ऊर्ज्वा के रूप में हमें यह प्रतिभा दृष्टिपात आती है।

मेरे प्यारे! यही तो सूर्य है जिसका समन्वय मुनिवरों! देखो गन्धर्व मण्डलों से रहता है और गन्धर्व जो है यह बुद्धि का प्रतीक कहलाया गया है। ये मेधावी बन करके ही माता के गर्भस्थल में बेटा! उसका निर्माण होता रहता है। तो विचार आता रहता है यही तो प्रकाशक हे मुनिवरो! देखो, **गुरुत्व देने वाला वह पृथ्वी है।** मुनिवरों! देखो पृथ्वी में गुरुत्व की एक प्रतिभा मानी जाती है। और जितना भी गुरुत्व में होता है वह सब पृथ्वी का ही है देखो वह सब पृथ्वी की प्रतिभा कहलाती है। मेरे प्यारे! देखो अग्नि, उष्ण बनाती रहती है आपोमयी तरलतम् ब्रह्मे।

तीन परमाणु

मेरे पुत्रों! देखो, विज्ञानवेत्ता जब भी संसार में, मानो देखो पनपने लगे तो वैज्ञानिकों ने सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके विज्ञान अपनी-अपनी कक्षा में गमन करता रहा है। परन्तु देखो तीन प्रकार के परमाणुओं को स्वीकार करता है। सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर मानो देखो विज्ञानवेत्ता होते चले आए और वे मानो देखो वे तीनों माता के गर्भस्थल से प्राप्त होते हैं। मेरे प्यारे! देखो गुरुत्व, तरलत्व और तेजोमयी ये तीन परमाणु कहलाते हैं। जिन परमाणुओं की आभा में ये सर्वत्र विज्ञानवेत्ता अपने कक्ष में रमण करता रहता है और नाना प्रकार के यन्त्रों में तत्पर रहता है। तो इसीलिए ये तीन ही तो परमाणु हैं और तीन ही परमाणुओं से मेरे पुत्रों! देखो यह संसार विज्ञानमयी दृष्टिपात आने लगता है। जैसे हमारे यहाँ मानो देखो ये गुरुत्व पृथ्वी का गुण है। तरलत्व जल का गुण

है और मुनिवरों! देखो यह अग्नि तेजोमयी कहलाती है। तो ये तीन प्रकार के परमाणु मेरे प्यारे! तेजोमयी प्राणम् ब्रहे कृतम् देवाः।

त्रेतवाद

इसी प्रकार देखो ये संसार त्रेतवाद में रमण कर रहा है। बेटा! त्रेतवाद किसे कहते हैं। त्रेतवाद कहते हैं। जहाँ तीन वस्तु अनादि रूप में दृष्टिपात आती रहती हैं। मानो जैसे–ओ३म् शब्द है उसकी तीन मात्राएँ होती हैं। रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण तीन गुण कहलाते हैं। मेरे पुत्रों! तीन ही प्रकार के परमाणु हैं। मानो गुरुत्व, तरलत्व और तेजोमयी। इसी प्रकार मुनिवरों! देखो, तीन कारणों से संसार का जन्म होता है। रचाने वाला, रचने वाली और देखो उसको अपने में धारण करने वाला अथवा उसका उपयोग करने वाला। मेरे पुत्रों! देखो ये त्रेतवाद कहलाता है। विचार आता है इसी प्रकार, प्रत्येक वस्तु में जब याज्ञिक याग करने लगता है तो मुनिवरों! देखो मधु ''अमृतम् ब्रह्मे'' और देखो मधु, रोगनाशक और मुनिवरों! देखो पुष्टिवर्धक, ये भी त्रेतवाद में परणित हो रहे है। विचार आता रहता है भूः, भुवः, स्वः ये तीन लोक कहलाते हैं। मेरे पुत्रो भूः और भुवः और स्वः जिसे हम द्यौ कहते हैं। ये तीन ही लोक कहलाते हैं मण्डलाम् ब्रह्मे। मेरे प्यारे! देखो जैसे हमारे यहाँ भूः पृथ्वी और भुवः मध्य और मुनिवरों! देखो स्वः द्यौ कहलाता है। तो विचार आता है इसी कक्ष में बेटा! ये परम्परागतों से मानव गतिवान् रहा है और विज्ञानवेत्ता भी मुनिवरों! देखो गतिवान् रहे हैं। तो विचार आता रहता है, वेद का आचार्य कहता है, क्या मुनिवरों! देखो माता के गर्भस्थल में जब हम जैसे शिशु होते हैं तो मानो देखो यह त्रिविधा हमें प्राप्त होती रहती है।

आओ मेरे प्यारे! विचार आता रहता है अरे! वायु प्राण देता है और अन्तरिक्ष अवकाश देता है। जहाँ वो भ्रमण करता रहता है। तो मेरे

प्यारे! देखो वह माता वसुन्धरा कहलाती है। हे वसुन्धरा! तू हमारा कल्याण करने वाली है। हे वसुन्धरा! तेरे ही गर्भस्थल में हम सब वशीभूत हैं। तू अपने में हमें बसायमान कर रही है।

माता की शिशु आत्मा से वार्त्ता

मेरे पुत्रों! देखो उस माता का नाम वसुन्धरा कहलाता है। यह माता वसुन्धरा यदि यह अपने गुणों को अपने में धारण करने लगती है तो यह बालक को, शिशु को, हम जैसे पुत्रों को गर्भस्थल में महान् से महान् शिक्षा दे करके यह ब्रह्मवेत्ता बना देती है। मानो देखो मुझे स्मरण आता रहता है, मैंने तुम्हें कई काल में कहा, वेद मन्त्र इस प्रकार के आते हैं ''ममत्वाम् ब्रह्मणे मातस्तुपः प्रव्हा लोकाम् शिशु व्रणम् ब्रव्हे क्रतम'' बेटा! वेद की आख्यायिका यह कहती है कि माता अपने शिशु की आत्मा से वार्त्ता प्रकट करती है। बेटा! वेद मन्त्रों में यह आया कि माता अपने गर्भ की आत्मा से वार्त्ता प्रकट करती है, तो बेटा! कैसे कर पाएगी? यह विचार आता रहता है, मेरे पुत्रों! मुझे स्मरण आता है कि वेद मन्त्र अपने में पूर्णता की घोषणा करता है। पूर्णता के लिए वो अपना परिचय दे रहा है। तो मुनिवरों! देखो ''वेदमन्त्रम् ब्रह्माः आगे वेद मन्त्र आया'' प्राणस्सुतम् ब्रव्हे प्राणाअपानाम् ब्रव्हे कृतम् देवत्वाम् लोकम् ब्रहा उदानाम् ब्रव्हे क्रतो सम्भवा प्रव्हे कृतम्वहाः''। मेरे पुत्रों! देखो उन्होंने प्राण के सम्बन्ध में कहा है, क्या माता कैसे, माता जब बाल्यकाल में विद्यालय में अध्ययन करे तो उसे यौगिक बना देना चाहिए। मानो देखो प्राण को अपान और अपान को व्यान में मानो जब तीनों प्राणों को एक सूत्र में ला करके और ये उदान प्राण के साथ में जब गमन करता है तो मेरे पुत्रों! देखो माता अपनी गर्भ की आत्मा से वार्त्ता प्रकट कर लेती है। विचार आता रहता है बेटा! प्राण को अपान में और अपान को मुनिवरों! व्यान में और व्यान को मुनिवरों! देखो उदान में जब प्रवेश कर देती है तो इन सब प्राणों का एक विचार, एक सूत्र में आना प्रारम्भ हो जाता है।

आन्तरिक जगत

मेरे पुत्रों! मुझे वो काल स्मरण आता रहता है जब प्राण की ही प्रतिक्रियाओं के द्वारा मानव की चिकित्सा होती रही है और प्राण से ही मुनिवरों! देखो जब प्राण को उदान और समान में मिलान कर देते हैं तो बहुत से रुग्णों का विनाश हो जाता है। और जब मुनिवरों! देखो पञ्चीकरण को अपने में धारण करते हैं, प्रत्येक मानव देखो, इन्द्रियों के विषयों को, जब वह मुनिवरों! देखो वह अपने-अपने में ही दृष्टिपात करता रहता है, प्राण के ऊर्ध्वागमन करने से, अश्व बनाने से ही, मेरे पुत्रों! देखो, अपने आन्तरिक जगत को वो जान सकता है। यदि कोई मानव प्राणायाम नहीं कर रहा है, प्राणसत्ता को नहीं जानता है, प्राण को अपान में मिलाना नहीं जानता है और अपान को व्यान में मिलाना नहीं जानता है, मेरे प्यारे! देखो, उसको उदान में प्रवेश करता हुआ, देखो वह व्यान को अब्रहे तो मुनिवरों! देखो वह मानव एक यौगिक प्रतिक्रिया को सिद्ध कर लेता है। और वह अपने आन्तरिक जगत को दृष्टिपात करने लगता है। जब तक अपने अन्तर्हृदय में हम यही नहीं जान पाते कि हमारी आत्मा कहाँ वास करता है, आत्मा मानो देखो क्या है, चेतना है, जड़वत् है, मानो देखो इस प्रकार चेतना हम दर्शनों में कहते हैं। हम भी चेतना स्वीकार करते हैं। ज्ञान और प्रयत्न की प्रतिभा से उसे मानो देखो ज्ञान और प्रयत्न का मूल कहते हैं। मेरे प्यारे! वास्तव में मूल है, परन्तु जब तक प्राण की इसमें पुट नहीं लग पाती, **प्राण को हम इन प्राणों से नहीं जानेंगे, इस आन्तरिक जगत को हम नहीं जान सकते।** जैसे बेटा! देखो, वैज्ञानिकवेत्ता, एक परमाणु को जानता है और परमाणु का जब वो विभक्त करता है तो परमाणु में एक ब्रह्माण्ड उसे दृष्टिपात आने लगता है बेटा! इसी प्रकार जब प्राण को अपान में, अपान को व्यान में और व्यान को समान में और समान को उदान में जब प्रवेश करता है तो बेटा! वो अपने आन्तरिक जगत के ब्रह्माण्ड को जानने लगता है। इसी प्रकार माता, माताओं का जीवन इस प्रकार रहना चाहिए जिससे

वह प्राण के आश्रित हो करके बेटा! अपने गर्भ की आत्मा से वार्त्ता प्रगट कर लेती है और वहीं उसे शिक्षा देना प्रारम्भ करने लगे। दर्शनों की मीमाँसा करती माता अपने बाल्य को ऊँचा बना सकती है। मेरे पुत्रों! मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना तुम्हें देने नहीं आया हूँ। मुझे माता मदालसा का जीवन प्रायः स्मरण आता रहता है जो इस प्रकार की प्रतिक्रियाओं को और विद्याओं को जानने वाली थी। मेरे पुत्रों! देखो मैं इस सम्बन्ध में विशेषता तुम्हें देना नहीं चाहता हूँ।

विचार-विनिमय क्या, मुनिवरों! देखो, माता के गर्भस्थल में बेटा! देखो, वह निर्माणवेत्ता निर्माण कर रहा है। मेरी भोली माता को कोई ज्ञान नहीं होता है, कौन निर्माणवेत्ता है, कौन इतना विशिष्ट विज्ञानवेत्ता है, जो माता के गर्भस्थल में मानव का निर्माण कर रहा है। बेटा! देखो बहत्तर करोड़, बहत्तर लाख दस हजार दो सौ दो नाड़ियों का निर्माण कर रहा है। वह निर्माणवेत्ता है बेटा! वह निर्माण कर रहा है, परन्तु मेरी भोली माता उससे वञ्चित रहती है। वह नहीं जान पाती कौन निर्माण कर रहा है। मेरे पुत्रों! देखो यह अग्नि, देखो उष्ण बनाती है और मुनिवरों! देखो यह वायु प्राण देता है। प्राण व अपान में ही मेरे पुत्रों! दोनों का, इन पाँचों प्राणों का उद्घोष होने लगता है। जब उद्घोष होने लगता है तो बेटा! अन्तरिक्ष एक अवकाश है, उसी में वो गमन करता है। माता के गर्भस्थल में भी अन्तरिक्ष है और बाह्य जगत में भी अन्तरिक्ष है। पृथ्वी के गर्भ में भी अन्तरिक्ष है। मेरे प्यारे, भूः भुवः स्वः में भी अन्तरिक्ष कहलाता है। बेटा! आज मैं तुम्हें विज्ञान के तथ्यों में ले जाने के लिए हम नहीं आए हैं।

बाह्य जगत

विचार-विनिमय क्या कि माता के गर्भस्थल में हम जैसे शिशुओं का निर्माण होता है परन्तु मेरी भोली माँ उससे वञ्चित रहती है। परन्तु जान नहीं पाती कौन निर्माणवेत्ता है। हे माता वसुन्धरा! तेरे ही गर्भस्थल

में हम सब वशीभूत हैं तू अपने में बसाने वाली है। तो इसीलिए इसे माता वसुन्धरा के रूप में परणित किया गया है। हे माता तू बसाने वाली है परन्तु देखो जब माता के गर्भस्थल से मानो देखो शिशु बाह्य जगत में आता है। माता के गर्भ से वह जब बाह्य जगत में आता है तो पृथ्वी माता की गोद में चला जाता है। यह पृथ्वी वसुन्धरा कहलाती है। बेटा! यह अपने में धारण करने लगती है। इस पृथ्वी के गर्भस्थल में मानो देखो कहीं, विज्ञानवेत्ता कहते हैं कहीं खाद्य तप रहा है, गमन कर रहा है और कहीं खजिन पदार्थ मानो तपायमान हो रहा है। मानो देखो इसके गर्भ में क्या नहीं है बेटा! हे माता वसुन्धरा! तेरे गर्भस्थल में जब हम सब वशीभूत हो जाते हैं तो मानो देखो तेरे गर्भस्थल में मानो देखो कहीं खाद्य मानो गमन कर रहा है तो कहीं खनिज गमन कर रहा है। उसी से बेटा! देखो जब अन्नवाद को अन्नवान प्राणी हो जाता है तो अन्न के उपयोग को जानता है। अन्न को मानो कृषि वसुन्धरा से लेना जानता है। परन्तु देखो विज्ञानवेत्ता जब इसके ऊपर गमन करता है तो बेटा! विज्ञानवेत्ता बन जाता है। हे माता! तेरे ही गर्भस्थल में आ करके तो विज्ञानवेत्ता बनते हैं। परन्तु देखो विज्ञानवेत्ता तो जैसे पृथ्वी मण्डल में है, ऐसे मङ्गल मण्डल में भी है, बुद्ध में भी है, शुक्र में भी है, नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों में बेटा! विज्ञान है, ज्ञान है, विवेक है, सर्वत्रता विद्यमान है। परन्तु देखो वह वहाँ भी **पृथ्वी के कणों से ही उनका विज्ञान का प्रारम्भ होता है।** हे मातेश्वरी! तेरे गर्भस्थल में पृथ्वी मण्डल में भी मानो देखो जितना विज्ञानवेत्ता है वो सब तेरे ऊपर **सबसे प्रथम गुरुत्व के ऊपर अध्ययन करना प्रारम्भ करता है** और वह तेरे गुरुत्व को जानता हुआ, मानो देखो उसमें से खाद्य, खनिज पदार्थों को जानने लगता है। विज्ञानवेत्ता बेटा! जिस पृथ्वी के गर्भ में वसुन्धरा बना करके जब प्रवेश करता है विज्ञानवेत्ता, तो बेटा! इसके गर्भस्थल में कहीं खाद्य तप रहा है, कहीं खनिज तप रहा है, मानो कहीं जल को शक्तिशाली बनाया जा रहा है। कहीं रत्नों की धातु का निर्माण हो रहा

है, मानो कहीं रत्नों का निर्माण हो रहा है। वाह रे मेरे प्यारे प्रभु! तू कितना विज्ञानवेत्ता है। हे माता वसुन्धरा! तेरे गर्भस्थल में मानो देखो यह संसार वशीभूत हो रहा है।

मेरे पुत्रों! जब मैं इस वाक्य के ऊपर अन्वेषण अथवा अनुसन्धान करना हम प्रारम्भ करते हैं तो वैज्ञानिकजन इसके गर्भ में प्रवेश हो जाते हैं। कहीं तुझे मानो देखो अहिल्या के रूप में वर्णन किया है, कहीं तुझे वेद प्रथा कहता है, कहीं मानो देखो वसुन्धरा ही नहीं, कहीं तुझे कामधेनु कहता है। कई प्रकार से बेटा! देखो नाना प्रकार के व्यञ्जनों को जन्म देने वाली है और तेरा समन्वय मानो देखो हुत से ले करके और देवत्त्व, मानो तेरी आभा विद्यमान रहती है। मेरे पुत्रों! देखो यह मेघमण्डल भी तेरे ही आश्रित हो करके तेरे ऊपर वृष्टि करते हैं क्योंकि तू पिपासा में जब परणित होती है, पिपासा तुझे होती है तो वह देवता ही तो मानो देखो अन्न देवता, तेरे ऊपर वृष्टि को प्रारम्भ करते हैं। मानो जेसे यजमान हुत कर रहा है। **हे यजमान! जब तू हुत करता है आहुति देता है तो उस समय मानो देखो वो तेरी जो आभा है, स्वाहा की जो ध्वनि है, वही तो मानो देखो उस वायुमण्डल में छायामान होती है। वह परमाणु को ले करके और वेद मन्त्र को ले करके जब छायामान हो करके गमन करती है तो वही तो मानो देखो एक हुत कहलाता है।** अग्नि उनका सबका विभाजन कर देती है। शब्द को भी अपने ऊपर अश्वार कर देती है। जैसे अश्व के ऊपर देखो अश्वार अपने में धारयामि बन जाता है, इसी प्रकार तू अपने में धारण करने वाली है। जब तू धारयामि बन करके धारण करती है तो मानो हमारा जीवन एक महान् पवित्रता की वेदी पर सदैव तत्पर हो जाता है।

मेरे पुत्रों! देखो, वेद का आचार्य कहता है, वेद मन्त्र भी यही कहता है, क्या वह जो पृथ्वी है ''अमृतम् ब्रह्माः'' मेरे प्यारे! देखो विज्ञानवेत्ता इसके गर्भ में जब वशीभूत होते हैं, इसके गर्भ में प्रवेश कर

जाते हैं तो नाना प्रकार का मानो देखो ''वृत्तम् ब्रव्हा वृतम्'' मेरे प्यारे! उसे हमारे यहाँ एक याग कहते हैं। **जिसे हम वाजपेयी याग कहते हैं।** वाजपेयी याग का अभिप्राय यही कहलाता है। वेद का मन्त्र कहता है ''वाचम् ब्रह्मणे कृतम् बन्धनम् ब्रव्हे, वृतम् यागाम् समीत् प्रव्हे कृतम् लोकाहम्, वाचन्नमम् ब्रव्हे वृत्रासुरस्तम् वृतम् देवत्वाम् भविते देवो इन्द्राः''।

याग से वृष्टि क्रम

बेटा! वेद का मन्त्र यह क्या कह रहा है? वेद का मन्त्र कहता है कि यज्ञो ब्रह्मणे कृतम्'' मेरे प्यारे! याग जब प्रारम्भ होता है, याग को देखो अग्नि विभक्त कर देती है। परमाणुओं को विभक्त कर देती है उसको धुन्ध अपने में धारण कर लेता है। देखो वह काला हिरन अपने में धारण करने लगता है। और वह काला हिरण ही उसको ले करके वृत्रासुर को प्रदान कर देता है। और वृत्रासुर और मुनिवरों! देखो, वृत्रासुर जब शचि के समीप जाता है और शचि इन्द्र से कहती हैं, अपने देवता से क्या भगवन्, देखो यह जो वृत्रासुर है यह वृत्त बन गया है इस पर आक्रमण करो यह संग्रह करने वाला बन गया है। तो मेरे प्यारे! देखो वेद का मन्त्र कहता है, क्या। उस समय जब यह देखो ''धम् धम् ब्रव्हे क्रतम्'' मुनिवरों! देखो जब ये याग ''अमृतम् देवो यज्ञम् ब्रव्हे'' जब ये काला हिरण ले जाता है उसे वृत्रासुर अपने में धारण कर लेता है। मेरे पुत्रों! देखो वेद का मन्त्र कहता है, इन्द्र कहते हैं वायु को और शचि कहते हैं विद्युत को और मुनिवरों! देखो, मेघमण्डलों को वृत्रासुर कहते हैं मेघमण्डलों को और हिरण कहते हैं धुन्ध को, जो याग को अपने में धारण करके मानो देखो वृत्रासुर को, मानो देखो जब उसका सन्निधान, सम्मिलन होता है, समुद्रों से जलों का उत्थान होता है और जब इन तीनों का संघर्ष होता है शचि और इन्द्र का और मेघों का, तो बेटा! वृष्टि प्रारम्भ हो जाती है।

बलि का अभिप्रायः

हमारे यहाँ यह आया है, विचार आया है अमृतम् गौवृत्तम् देवो वक्षत्राः क्रतम् विशरो धन्नजम् ब्रव्हा। वेद का मन्त्र कहता है कि यहाँ विसरव का देखो जब यहाँ धीमी वृष्टि प्रारम्भ हो जाती है तो वह जो वृत्तम ब्रहाः, मेरे प्यारे! देखो वह जो विसरव है गऊ का बछड़ा, उसकी बलि का, मानो देखो यहाँ वर्णन आया है कि उसकी बलि होती है। तो मेरे प्यारे देखो यागों में बलि होना, यह व्रत है, मेरे पुत्रों! देखो, यहाँ वेद के मन्त्र के आश्रय को जानना चाहिए, क्या देखो जब वृत्रासुर से धीमी-धीमी वृष्टि होती है, इन्द्र ने धीमी-धीमी वृष्टि की तो पृथ्वी मानो जो वसुन्धरा कहलाती है। मेरे पुत्रों! देखो पृथ्वी के अमृतम् वहाँ बैल की बलि का वर्णन इसीलिए, क्योंकि वह बलि देता है, अपना पुरुषार्थ करता है, **यहाँ बलि का अभिप्राय पुरुषार्थ है** उसके प्राणों को हनन करना नहीं है। मानो देखो बलि का अभिप्राय है कि हम अपने में देखो उसका जो पुरुषार्थ है वह पृथ्वी के मानो वसुन्धरा की चमड़ी को उधेड़ करके, उसके मांस में, उसके गर्भ में बीज की स्थापना कर देता है। तो मेरे पुत्रों! देखो यह उसकी बलि है। वह पृथ्वी नाना प्रकार के व्यञ्जनों वाली बन करके देवताओं के सहयोग से, मेरे पुत्रों! देखो, समाज को, राष्ट्र को, मुनिवरों! देखो खाद्य और खनिज पदार्थों को प्रदान करती चली जाती है।

विचार आता रहता है, हे माता वसुन्धरा! तू हमारा कल्याण करने वाली है। हे वसुन्धरम् ब्रह्माः वसुन्धरा के गर्भ में बेटा! ज्ञानी स्वयँ वशीभूत रहते हैं। यह नाना प्रकार का खनिज देती है, रत्न देती है, निर्माणित करती रहती है। मानव इसी के ऊपर नाना प्रकार की आभा में व्यक्त हो जाता है और विचारता रहता है बेटा!, तो मेरे पुत्रों! देखो वेद का मन्त्र कहता है वसुन्धरम् ब्रह्माः वसुन्धरम् रुद्रोआगप् प्रमाणम् व्रतम् देवत्वाम् वसुन्धराः, हे वसुन्धरा! हम तेरे पे बसते हैं। तू हमारा कल्याण करने वाली है। हम मानो तेरे से प्रार्थना कर रहे हैं कि हमारे अन्तर्हृदयों में तेरे जानने का सामर्थ्य

बना रहे और तुझे जानते हुए हम ज्ञान में और विज्ञान में रत्त हो जाएँ जिससे हमारे से किसी प्रकार का दुष्कर्म न हो जाए।

माता वसुन्धरा के गर्भस्थल की विवेचना

मेरे प्यारे! देखो यहाँ वेद का ऋषि कहता है, आचार्यों ने कहा है, हे माता वसुन्धरा! तू हमें धारण कर। और हमें तू देती है, तू नाना– देखो तेरे गर्भ में जल का देखो सूर्य का सहयोग आता है, सूर्य की किरणें, क्रान्ति आती है और उसी कान्ति में जल को तपायमान किया जाता है। वह जल इतना तपायमान होता है कि वैज्ञानिक क्या उसे अपने में धारण करते हुए वह वाहनों में क्रियाकलाप करता रहता है। वाहन गति करते रहते हैं। वह मानो देखो कहीं जल को तपाया जा रहा है, कहीं रत्नों को तपाया जा रहा है। कहीं खनिज की धाराओं का जन्म हो रहा है। वाह रे मेरे प्रभु! तू कितना विज्ञानवेत्ता है, तू कितना महान् मानो देखो निर्माणवेत्ता बन करके, एक-एक वस्तु का निर्माण, और उसको गतिवान् बना रहा है। तुझे वेद गतिवान् कहता है। **मेरे पुत्रों! देखो माता पृथ्वी के गर्भ में यह वसुन्धरा है,** प्रत्येक प्राणी को देखो इससे अपनी आभा प्राप्त होती रहती है। चार प्रकार की सृष्टियों का निर्माण, इसी वसुन्धरा के गर्भ में निहित रहता है। बेटा! देखो, स्थावर, जङ्गम और अण्डज और स्वेधज, यह चार प्रकार की सृष्टि कहलाती है जो पृथ्वी के गर्भ से बेटा! उसका जन्म होता है। वह अपने में उसे जन्माती है और धारण करती रहती है, और उसे मानो देखो नाना प्रकार के खाद्य और खनिज पदार्थ देती है। वाह रे मेरे प्रभु! मानो हे माता वसुन्धरा! तेरे गर्भस्थल की हम विवेचना नहीं कर पाते, क्योंकि तेरा अनन्तमयी ब्रह्माण्ड है। विज्ञानवेत्ता, जब तेरे गर्भ में प्रवेश करते हैं तो नाना प्रकार की आभा से युक्त हो जाते हैं। तो मेरे पुत्रों! देखो, विचार-विनिमय क्या, मुनिवरों! देखो, **वह प्रभु हमारी, अमृताम्, देखो वसुन्धरा है।** वह पृथ्वी माता ही वसुन्धरा है।

मुनिवरों! देखो, जहाँ माता जननी को हम वसुन्धरा कहते हैं, वहीं मुनिवरों! देखो वसुन्धरा नाम पृथ्वी का है। जितना विज्ञानवेत्ता है, विज्ञान है, उसी के गर्भ से पनपता रहता है। खनिजों को वैज्ञानिक जानता है। तरङ्गों को जानता है, उनका मिलान कराता रहता है और उसके उपरकण बना कर बेटा! कोई सूर्य की परिक्रमा कर रहा है, कोई चन्द्रमा की परिक्रमा करता है। कोई ध्रुव की परिक्रमा करता है। बेटा! देखो, इस नाना प्रकार के जगत में जो ब्रह्माण्ड है, उस ब्रह्माण्ड को जानने के लिए तत्पर हो जाता है।

आओ मेरे पुत्रों! मैं तुम्हें विशेष विवेचना तो देने नहीं आया हूँ, केवल तुम्हें परिचय देने के लिए चला आता हूँ। और वह परिचय यह है कि हम अपने में तेरी महिमा को जानते हुए, हे माता वसुन्धरा! तेरे ही गर्भस्थल में, हम सदैव तत्पर रहें, तेरे को जानते रहें। बेटा! मैं पृथ्वी की चर्चाएँ, मानो वसुन्धरा के सम्बन्ध में, कल शेष चर्चाएँ हम प्रगट करेंगे। आज का वाक्य हमारा क्या कह रहा है, हे वसुन्धरा! तू अमृतम् ब्रह्मणे वृत्तम् देवाः। मेरे प्यारे! तेरे ही गर्भस्थल में, वैज्ञानिकजन जब तेरे गर्भ में प्रवेश करते हैं तो तेरे से नाना प्रकार की आभा उत्पन्न हो जाती है। जैसे देखो अहिल्या के सम्बन्ध में कहा जाता है, हे अहिल्याम्, इस पृथ्वी का नाम ही तो अहिल्या है। बेटा! जिसके गर्भ में मानो नाना प्रकार के खनिज हैं उनको जानने लगते हैं। तो हमारे यहाँ अहिल्या प्रतिभा यन्त्रों का निर्माण होता रहा है। भारद्वाज मुनि के यहाँ, वैसे देखो महर्षि विश्वामित्र जब धर्नुयाग कर रहे थे, वहाँ भी देखो इसको जाना गया। क्योंकि राम में यह विशेषता थी; भगवान् राम में, क्या वे पृथ्वी के करणों को सुगन्धित करके यह निर्णय ले लेते थे कि इतनी दूरी पर इतना खाद्य और खनिज विद्यमान है। मेरे पुत्रों! देखो और विज्ञान अपने में अन्वेषण करता रहा है, विचार-विनिमय करता रहा है। तो विचारधारा को अपने में लाने का प्रयास किया जाए। यहाँ मेरे प्यारे! देखो खाद्य और खनिज पदार्थों में मानव देखो अन्वेषणवादी बनता है।

बाह्य जगत और आन्तरिक जगत, दोनों के ऊपर जब वो विश्लेषण करता है तो मुनिवरों! देखो एक महानता का जन्म हो जाता है।

ये है बेटा! आज का वाक्। आज का वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः यह है कि माता के गर्भस्थल में बेटा! जब हम जैसे शिशु रहते हैं तो देवताओं के संरक्षण में पनपते रहते हैं। मुनिवरों! जब पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश होते हैं तो इसके गर्भ में जो खाद्य, खनिज पदार्थ पनप रहा है वो भी देवताओं के द्वारा ही पनप रहा है। यह चर्चा मैं कल प्रगट करूँगा, क्या देवताओं के द्वारा कैसे पनप रहा है। आज का विचार केवल यह कि हम परमपिता परमात्मा की महती को जानते हुए और उसके जड़ जगत और चेतन्य जगत, दोनों को जानते हुए बेटा! इस संसार सागर से पार हो जाएँ। ये है बेटा! आज का वाक्।

आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्राय यह, क्या हम मुनिवरों! देखो ''जड़म् ब्रव्हा, आत्माम् भूतम् ब्रव्हे'' **आत्मा जहाँ होता है वहाँ ज्ञान और प्रयत्न है और जहाँ आत्मा देखो इन दोनों गुणों से शून्य जगत है वह पिण्ड रूप में है।** वह मुनिवरों! देखो, अमृतम् जड़वत् कहलाया गया है। परन्तु **परमपिता परमात्मा इतना महान् है क्या वो चेतना में भी और जड़ में भी दोनों में विद्यमान रहता है।** इसलिए उस प्रभु की उपासना करनी चाहिए। यह है बेटा! आज का वाक्। अब समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रकट करूँगा।

ओ३म् देवाः आभ्याम् रथम् मनाः वायाऽम्।
ओ३म् दधि प्रीताहम् रेवाः आभ्याम् रथम् गायन्तवाः।
ओ३म् यशश्चारिहि वाचन्नमाऽम्।।

दिनाँक : 23 जनवरी, 1990

।। ओ३म् ।।

श्रावणी पर्व

जीते रहो!

देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मेरे प्रभु की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि वह जो मेरा अनुपम देव प्रभु है वह यज्ञोमयी स्वरूप माना गया है। जितना भी, संसार का मानवीय क्रियाकलाप है उस सर्वत्र मानवीयता की आभा में वह महान् देव दृष्टिपात आ रहा है और वह मानवीयत्व व एक याग के रूप में परणित रहता है। मैंने बहुत पुरातन काल में निर्णय देते हुए कहा था कि हमारा वेद मन्त्र यह कहता है कि हम उस परमपिता परमात्मा की महती में सदैव रत्त रहें और यह यज्ञोमयी स्वरूप है। यज्ञ उस मेरे ब्रह्म का एक आयतन माना गया है, नाना प्रकार की प्रेरणाएँ प्राप्त होती रहती हैं, और विचार आता रहता है कि हम उस यज्ञ के गर्भ में अपने को प्रायः ले जाएँ। **जितना भी सुकर्म है उस क्रियाकलाप का नाम ही तो यज्ञ माना गया है।**

पुष्पाञ्जलि का स्त्रोत

यजमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान है, परन्तु वह ब्रह्मचर्य में रत्त हो रहा है और विचार रहा है कि मैं उस परमपिता परमात्मा की अनुपम महान् ज्योति में सदैव रत्त हो जाऊँ। **यह जो सुविचार है सुचिन्तन है, हे यजमान! यही तो तेरा यज्ञ है।** जब तू साकल्य को ले करके अग्नि के समीप विद्यमान होता है तो वायुमण्डल में उस परमाणु का संचालन कर रहा है, जिस परमाणुवाद से मानव का जन-जीवन निर्माण होता है अथवा

जन-जीवन निर्माण होता है अथवा जन-जीवन की उपलब्धियाँ होती हैं। जैसे माता के गर्भस्थल में परमाणु की प्रतिभा ही तो याग कहलाता है और वह याग अपने में पूर्ण हो करके वही तो मेरे प्यारे! पिता और पुत्र के रूप में परणित होता रहता है। आज का हमारा वाक्य यह कहता है ''यज्ञम् वाचप्रहे ब्रह्म लोकाम्'' हे मानव! तू सुकर्म कर **मानव तू अपनी अन्तरात्मा के अनुकूल कर्म करने वाला बन,** क्योंकि जब तू अपनी आत्मा के अनुकूल कर्म करता है तो यह तेरा नवीन जगत अवश्य बन जाता है। तेरे जीवन में एक पुष्पाञ्जलि होगी, धाराओं का जन्म होने लगता है।

बहुत पुरातन काल हुआ जब ऋषि-मुनियों का समूह विद्यमान होता रहता था, अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके वह ब्रह्म वरचोसी की प्रायः चर्चा करते रहते थे, नाना यागों की चर्चाएँ होती रहती थीं, ''यागानाम् रुद्र भागं ब्रह्म वाचा'', यह संसार एक यज्ञशाला है कैसी प्रिय यज्ञशाला है जिसमें याग हो रहा है, अग्नि प्रचण्ड हो रही है, हुत किया जा रहा है, वही साकल्य मानव की प्रतिभा बन करके रहता है। आज का हमारा वाक्य क्या कहता है कि हम अपने में महान् और पवित्र बन जाएँ।

सर्वत्र ब्रह्माण्ड एक सूत्र

मेरे प्यारे! महानन्द जी मुझे कुछ प्रेरित कर रहे हैं, इनकी कुछ प्रेरणाएँ आ रही हैं यह श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में कुछ उद्गीत गाना चाहते हैं और यह इनकी प्रेरणा है कि ''राखीव प्रह्म वाचन'' यह बन्धन सूत्र कैसा है। यह बन्धनसूत्र महान् पवित्रता की एक धारा है; क्योंकि यह जो मानव का शरीर है इसमें एक-एक परमाणु है और वह परमाणु सूत्र में पिरोया हुआ है। यह मानव शरीर का निर्माण हो गया है, जो कि इस शरीर में प्रवाह गति कर रहा है, वह परमाणु गतियों में गतिशील हो रहा है, वह कितना प्रिय सूत्र है। ऐसी सामाजिक पद्धतियों में जब हम परणित हो जाते हैं, तो यह सब सूत्र कहलाते हें, ''मात्राणि भवे

सम्भवव्रहे वाचन् कृतिमान देवाः''। यह सर्वत्र ब्रह्माड एक सूत्र की भाँति है और यह सूत्र अपना क्रियाकलाप कर रहा है। बाह्य जगत के ऊपर में भी एक सूत्र अपना क्रियाकलाप कर रहा है। प्रत्येक प्राणी अपने-अपने सूत्र में पिरोया हुआ है, उसी में वह क्रियाकलाप हो रहा है उसी में वह जीवन की सत्ता को प्राप्त कर रहा है।

आज मैं कोई विशेष चर्चा नहीं प्रगट करूँगा; केवल आज का विचार हमारा यह कह रहा है कि हम यज्ञोमयी हैं, यह संसार एक प्रकार की यज्ञशाला है। यजमान यज्ञशाला में विद्यमान हो करके अपने जीवन को ऊर्ध्वा में पहुँचाने की प्रेरणा में लगा हुआ है, संसार के वैभव की चर्चा नहीं कर रहा है, आत्म-कल्याण की चर्चा कर रहा है। आत्मवत् अपने में महान् बनने के लिए सदैव तत्पर होना चाहिए।

मेरे प्यारे महानन्द जी कुछ दो शब्द की विवेचना करें, क्योंकि इनकी सदैव कामना रहती है यह राष्ट्रीय चर्चाएँ करते रहते हैं, मानवीय समाज की भी चर्चाएँ करते रहते हैं। परन्तु इनकी चेष्टा अनुशासन में लाने की रहती है। हम प्रायः यह कहते रहते हैं कि **अनुशासन मानवीयता का एक स्वाभाविक गुण कहलाता है।** अनुशासन में आना यह प्रियतम कहलाता है। अब मेरे प्यारे! महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी के उद्‌गार

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! मेरे भद्र समाज! मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी-अभी गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे, जैसे एक सागर है उसे गागर में सागर को भरण कर रहे हैं और हमें ऐसा प्रतीत होता है कि गागर में सागर की ही कल्पना प्रत्येक मानव के जीवन में प्रायः आती रहती हैं। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी-अभी कुछ सूत्रों की चर्चाएँ की हैं। श्रावणी पर्व के ऊपर भी उन्होंने कुछ अपना महत्त्व प्रगट किया कि श्रावणी पर्व क्या है।

बन्धन सूत्र

इस सम्बन्ध में आज अपने पूज्यपाद गुरुदेव से तो नहीं, परन्तु जो विचार यह संसार में दृष्टिपात आया है, इस श्रावणी पर्व के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न प्रकार की कल्पना यह रहती हैं। **काल्पनिक पुरुषों में एक कल्पना यह रहती है** कि महाभारत के काल में जब अभिमन्यु युद्धभूमि में सँग्राम के लिए पहुँचे तो वह महामाता कुन्ती के द्वार पर पहुँचे और उन्होंने अभिमन्यु के एक भुज में एक सूत्र को सूत्रित किया और यह कहा कि जब तक यह सूत्र तुम्हारे भुजों में रहेगा तब तक युद्धभूमि में तुम्हें कोई विजय नहीं करेगा।

एक मानवीय धारा यह कहलाती है। परन्तु **द्वितीय यह है** कि भगिनी विधाता के द्वार पर जाती है और वह उनके भुजों में एक बन्धन सूत्र सूत्रित कर देती है और **यह कहती है कि मैं जिस समय तक तेरा प्राण है आत्म रक्षा करती हूँ।** शरीर परिवर्तन हो सकता है परन्तु वेदों में सूत्र सूत्रित कर रहे हैं इसका परिवर्तन नहीं हो सकता, यह इनकी कल्पना मानी गई है।

तृतीय कल्पना यह है कि श्रावणी पर्व यह पूर्णिमा के दिवस है, पूर्णिमा के दिवस में श्रावणी समाप्त हो जाती है और भाद्रपद का प्रारम्भ हो जाता है, प्रारम्भ होने के लिए तत्पर हो जाता है। तो एक कल्पना यह है कि यह श्रावणी पर्व समाप्त हुआ और भाद्रपद का प्रारम्भ हो गया, ऋषि अपने विशुद्ध रूप में परणित होने लगे, विशुद्ध रूप में कृषि महान् बनने लगी।

चतुर्थ पक्ष है वह स्वीकार करता है कि यह वेद के पठन-पाठन के समय, वेद का पठन-पाठन क्यों होना चाहिए? श्रावणी पर्व पर तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव तो उसका उत्तर दे नहीं पाए, वे तो सूत्रों में ही रह गए, परन्तु मेरा तो यह विचार है कि यह जो श्रावणी पर्व पर वेदों का

पठन-पाठन होता है। ऋषि-मुनियों ने ऐसा माना है कि **सबसे प्रथम दिवस में ऋक् की उत्पत्ति हुई।** ऋक् कहते हैं वेद को, जो ऋक्रूपी वेद का जन्म होता है, जन्म क्या जहाँ जन्म की प्रतिभा आती है यदि उसको हम ईश्वरीय ज्ञान स्वीकार करते हैं, तो जन्म की उत्पत्ति का कारण क्या बनेगा क्योंकि यह तो ईश्वरीय ज्ञान है और ईश्वरीय यह कि संसार की रचना है, जब संसार की रचना, ईश्वरीय ज्ञान की रचना, दोनों का एक ही काल कहा जाता है उसकी रचना का प्रश्न ही समाप्त हो जाता है।

जब हम और गम्भीरता में जाते हैं तो इसके ऊपर अनेकानेक बुद्धिमानजन सब विद्यमान हो करके वेद का पठन-पाठन करते हैं, इसकी उपलब्धि के सम्बन्ध में यह नहीं कहा जा सकता परन्तु विचार यह है कि सब महापुरुष अपनी-अपनी स्थलियों पर रहते हैं, **पुरोहितजन वर्षाकालीन समय में अपने-अपने गृह में यज्ञ करते हैं।**

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव को तो यह सब प्रतीत है, परन्तु मैं धृष्टता कर रहा हूँ जो यह वाक्य उच्चारण करने के लिए मैं तत्पर हो गया हूँ। परन्तु जब मैं आया हूँ इसके सम्बन्ध में अपने विचार अवश्य व्यक्त करूँगा। आज का हमारा विचार श्रावणी पर्व के उपलक्ष में है; वाक्यों में जो कल्पना करते हुए कल्पना भी यथार्थता में रत्त रहती है। परन्तु देखो जो वास्तविक रूप होते हैं वह भी अपनी स्थलियों पर निहित होते हैं। विचार यह आता है, पूज्यपाद गुरुदेव ने भी मुझे कई समय वर्णन कराया है जहाँ मैं ब्रह्मसूत्र की चर्चा करता हूँ जहाँ मैं इस श्रावणी पर्व के उपलक्ष में मैं बन्धन सूत्र की चर्चा करता हूँ उस मानव को बन्धन, वह एक सूत्र कहलाता है जिस बन्धन में इस सूत्र में मानव सूत्रित हो रहा है अथवा वह पिरोया हुआ प्रतीत होता है। परन्तु देखो यह भी मेरे विचार में कोई प्रियतमता का विषय नहीं है। परन्तु विचार केवल यह है कि यह जो अनुभव हो रहा है कि यह जो पर्व है वह किसलिए, इस

प्रकार हम उपलक्ष के रूप में, हम याग के रूप में इसकी उद्गीतता में परणित हो जाते हैं।

वैदिक साहित्य और रुढ़िवाद

हमारे विचार में तो यह आता है कि **जिस समय सृष्टि का प्रारम्भ हुआ,** सृष्टि के प्रारम्भ के समय यह विचारा गया कि हमें सृष्टि करनी है हमें इस संसार में प्रभु के राष्ट्र को सुगन्धि में ले जाना है, दुर्गन्धि को समाप्त कर देना है। तो दुर्गन्धि और सुगन्धि में वह परिवर्तन परिवर्तित होता रहता है। यह जो परिवर्तन हो रहा है यह महान् और विचित्रता में परणित होता है, परन्तु यह वास्तव में विचारा जाए, कल्पना करने के लिए तो यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड को एक सूत्रवत् माना गया है। जैसे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने प्रगट किया है क्योंकि राजा प्रजा के लिए सूत्र है, और प्रजा राजा के लिए सूत्र है, पति-पत्नी के लिए सूत्र है, पत्नी पति के लिए सूत्र कहलाता है। वास्तव में देखो, माता पुत्र के लिए सूत्र है और पुत्र के लिए माता सूत्र कहलाती है। इसी प्रकार वास्तव में तो यह आचार्य और ब्रह्मचारी दोनों एक-दूसरे के पूरक में सूत्रित की कल्पना करते रहते हैं। प्रायः वास्तव में तो मुझे ऐसा दृष्टिपात आता है कि यह संसार एक-दूसरे में सूत्रित हो रहा है।

श्रावणी का पर्व पूर्णिमा का एक दिवस है। चन्द्रमा अपनी सम्पूर्ण कलाओं से युक्त होता है। सृष्टि के प्रारम्भ में जब सृष्टि का प्रादुर्भाव होता है तो ब्रह्माण्ड की रचना होती है, जब ब्रह्माण्ड की रचना होती है, तो इस ब्रह्माण्ड की रचना के साथ सूर्य से प्रकाश मिलता है, सूर्य द्यौ से प्रकाश लेता है और सूर्य का जो प्रकाश है वह चन्द्रमा में जा करके उद्बुद्ध होता है। चन्द्रमा अपनी सम्पन्न कलाओं से युक्त हो जाता है। चन्द्रमा अमृत को बिखेरता है। जैसे वेद के पठन-पाठन करने वाला पठन-पाठन की प्रतिक्रिया में वह रत्त रहता है। परन्तु उनकी पठन-पाठन की जो प्रतिक्रियाएँ हैं, पठन-पाठन का जो एक उद्घोष है, वह एक महानता में

परणित हो जाता है। इसी प्रकार चन्द्रमा अपनी सम्पन्न कलाओं से युक्त है। ऐसे ही हमारा जीवन भी सम्पन्न कलाओं से युक्त होना चाहिए।

श्रावणी पर्व के ऊपर एक पक्ष और **मेरे विचार में आया कि इस दिवस वेद रूपी प्रकाश का प्रादुर्भाव हुआ।** वेद के प्रादुर्भाव का, वेद का ज्ञान जो कि निष्पक्ष ज्ञान होता है उसकी उपलब्धियाँ मानव के हृदयों में उत्पन्न होने लगीं, क्योंकि मानव का हृदय निष्पक्ष होना, एक बड़ी महानता की एक गाथा कहलाती है। जब विचार आता है यह कोई न कोई पक्ष में चला ही जाता है, परन्तु देखो यहाँ एकोकी पक्ष रहता है, वेद के प्रकाश का एकोकी पक्ष रहता है। जो इसे अपना लेता है, वही प्रकाश में रत्त हो जाता है, वह अपनी रूढ़ियों को अपनी त्रुटियों को त्याग करके महत्त्वता में परणित ही जाता है। वह जो महत्त्व है वह मानवीयता की एक धारा में प्रायः रत्त हो जाता है। मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कई कालों में वर्णन करते हुए अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि यह जो वेद का ज्ञान है, इसके प्रादुर्भाव की प्रतिक्रियाएँ परम्परा से चली आ रही है।

यह सूत्र क्यों परणित किया जाता है, मानव सूत्र का एक ही प्रतीक है, एक धर्म और मानवता की परम्परागतों से रक्षा होनी चाहिए। रक्षा का यह प्रतीक है जो रक्षा नहीं कर पाते, वह सूत्र के अधिकारी नहीं होते। अपने पूज्यपाद गुरुदेव से, अब क्षमा पाते हुए कि यहाँ इस संसार में रूढ़ियाँ पनपती जा रही हैं। रूढ़ियों का प्रादुर्भाव हो गया है और देखो (''अज्ञानाम् ब्रह्माः'') ज्ञान का लुप्त वेद की प्रतिभा लुप्तवाद में परणित हो रही है। जब मैं इन विचारों को लाता हूँ यहाँ नाना प्रकार का गुडम्बावाद भी प्रतीत हो रहा है।

जब देखो इस समाज का विनाश का समय आता है तो मानवीयता लुप्त हो करके, मानव दर्शन लुप्त हो करके केवल रूढ़ियों का प्रादुर्भाव हो करके रूढ़ियाँ पनपती रहती हैं। गुडम्बावाद पनपता

रहता है। वेदों के पठन-पाठन तथा मन्त्रों को शान्त करके वह केवल देखो अपने मनोकृतियों में प्रकृति के आवेशों में परणित हो करके नाना प्रकार के मन्त्रार्थों को, वह श्रोत्रों में लेना प्रारभ कर देते हैं। बहुत पुरातनकाल में मैंने कहा था कि संसार में रूढ़ी नहीं रहनी चाहिएँ, संसार में रूढ़ी न रह करके प्रकाश रहना चाहिए, अन्धकार समाप्त होना चाहिए। और प्रकाश में समाज को रत्त रहना चाहिए।

हमारे यहाँ परम्परागतों से ऋषि-मुनियों ने एक क्रियाकलाप बनाया था। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव को मैंने और उन्होंने मुझे वर्णन कराया था। मैं भी उन्हीं से यह वाक्य लेता रहता हूँ कि एक ही क्रियाकलाप है मानव के मानव की आचार सँहिता बनाने का, क्योंकि प्रत्येक मानवाचार्य सँहिता को बनाना चाहता है; आचारसँहिता मानव के जीवन में आ जानी चाहिए। परन्तु आचार-सँहिता क्या है जैसे यजमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान है, पुरोहित अपनी स्थली पर विद्यमान है, वह पुरोहित आज्ञा देता है यजमान आओ, अब हम तुम मिल देखो मिलन करके यह याग करना चाहते हैं; हम यागों में परणित होना चाहते हैं। तो यजमान कहता हैं, प्रियतम आइए पुरोहित, हम ''परा'' जो ज्ञान है ''परा'' जो शब्द है उसे अन्तरिक्ष में लेना प्रारम्भ करते हैं। इसी सूत्र को ले करके वह अपनी-अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके क्रियाकलाप बनाते हैं। प्रातःकालीन याग होना है प्रातःकालीन सुगन्धि होनी हैं, गृह को सुगन्धित बनाना है; उसके पश्चात् पितरों की आभा में रत्त हो गए हैं, या ब्रह्म-याग में रत्त हो गए; बह्मा, ब्रह्म की सृष्टि को निहारना है।

जब मानव में गुडम्बावाद में यह एक रूढ़ियाँ बन जाती हैं, जो अपने को प्रभु स्वीकार करता है वह यह नहीं स्वीकार कर रहा है कि वह पञ्चमहाभौतिक पिण्ड बना हुआ है, उसका रचयिता है वह गुडम्बावाद में गुरु को यह स्वीकार करता है कि मैं परमपिता परमात्मा हूँ, वह परमात्मा की आभा में है। परन्तु यह नहीं स्वीकार करता कि वह

परमात्मा के बिखरे हुए ज्ञान को लाने का प्रयास करना है। अपने समीप ईश्वर की कल्पना करना कि हमारे को शिष्ठता हो जाए, इससे समाज में अज्ञान की प्रतिभा का प्रायः जन्म हो जाता है। वह अज्ञान नहीं रहना चाहिए, **हमारे ऋषि-मुनियों की सबसे प्रथम जो अनुपम देन है वह यह है कि मानव को विवेक होना चाहिए,** विवेक में तीव्र इच्छा हो जाए और तीव्र इच्छा हो करके वह परमात्मा की पगडण्डी को ग्रहण कर लेता है, वह मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण कर लेता है।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे कई काल में यह वाक्य वर्णन करते हुए कहा था, परन्तु आज मैं उन वाक्यों पर जाना तो नहीं चाहता हूँ। विचार क्या, समाज में रूढ़ियाँ धर्म और मानवता के ऊपर रूढ़ी नहीं होनी चाहिए, क्योंकि **धर्म एकोकी वचन है, मानव दर्शन एकोकी वचन है, वेद एकोकी वचन है,** यह भिन्न-भिन्न नहीं कहलाते। जब यह भिन्न-भिन्न नहीं होते एकोकी वचन है तो उस एकोकी वचन में ही तो प्रवेश होना है। उस एकोकी वचन में ही तो मानव को अपनी प्रतिभा में देखो रत्त हो जाना है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मुझे बहुत सूक्ष्म अपना विचार देते रहे हैं। आज मैं उन सूक्ष्म धाराओं में जाना नहीं चाहता हूँ। परन्तु मैं यह वर्णन कराना चाहता हूँ यहाँ जो रूढ़ियाँ बन जाती हैं वह रूढ़ियाँ एक-दूसरे के रक्त की पिपासी, एक-दूसरे के रक्त को पान करने के लिए तरस रही हैं।

पञ्च-याग

मैं पूज्यपाद गुरुदेव से, आज्ञा पाता हुआ कि यजमान जैसे यज्ञशाला में विद्यमान होता है। आ यजमान! तू **प्रातःकालीन ब्रह्म का चिन्तन** कर। **द्वितीय तू देव पूजन कर,** पूजन तेरा याग है। इसके पश्चात् तू पितर याग कर अथवा पितरों की सेवा कर, पितरों की आज्ञा का पालन कर और देखो पितर कौन कहलाते हैं, जो हमें देते है, पितर वहीं होते हैं, ''पितर ब्रह्म'' जो देने वाले हैं। जैसे माता पितर है, पिता पितर है, आचार्य पितर है, सूर्य पितर है, चन्द्रमा पितर है, परमात्मा पितर है, वायु और अग्नि

पितर कहलाते हैं, **जो भी हमें लाभप्रद होते हैं वह जो हमारी रक्षा करते हैं वह पितर कहलाते हैं।** इस प्रकार मैंने, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कई काल में पितरों की बड़ी विलक्षण व्याख्या की है।

पूज्यपाद गुरुदेव के आगे पितरों के सम्बन्ध में तो प्रश्न बहुत से हम करते रहते हैं, यह भी उनको निर्णय भी कराते रहे हैं। परन्तु विचार-विनिमय क्या, पित्तरों के सम्बन्ध में विशेष विवेचना नहीं, **पितर याग पितरों की आज्ञा का हम पालन करें।** यदि सूर्य प्रकाश देता है, तो वह पितर है तो हम भी दूसरों को प्रकाश देने वाले बनें। यदि वायु हमें प्राण देता है, तो हम भी दूसरों के प्राणों की रक्षा करें। यदि वह पितर अग्नि के रूप में रहता है तो हम भी ऊष्ण शक्ति को उत्पन्न करें, यदि चन्द्रमा अमृत को बहाता रहता है तो हम भी सत्यवादी बन करके मधुरभाषी बनें। देखो यह पितरों की आज्ञा का पालन है।

जहाँ माता यह चाहती है, जो हमारी पितर है वह चाहती है कि मेरा बालक विचित्र बन जाए, आज मैं उन विवेचनाओं में माता की आकांक्षा होती हैं कि मेरा पुत्र महान् और पवित्र बन जाए, मेरे पुत्र में महानता का दिग्दर्शन हो जाए। तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा कि जब माता यह चाहती है, पितर क्या चाहता है, मेरे कुल की परम्परा ऊँची बन जाए, मेरे कुलों की परम्परा ऊँची बन जाए, मेरे कुलों की मर्यादा महान् बन करके मेरे पितरों का नामोकरण ऊर्ध्वा में गति करता रहे।

आचार्य क्या चाहता है, आचार्य शिशु को चरणों में ओत-प्रोत कराता है और वह आचार्य कहता है, ब्रह्मचारी तू आ जितनी भी तेरी इन्द्रियाँ हैं तेरे समीप, तू इन्द्रियों को मुझे इसका वर्गीकरण कर दे। हे ब्रह्मचारी आ तू अपनी वाणी, प्रत्येक इन्द्रिय को मुझे प्रदान कर दे, मैं उनका, शोधन कर दूँगा। आचार्य उनका शोधन कर देता है, आचार्य प्रत्येक इन्द्रिय उनके क्रियाकलापों से लाभान्वित करता हुआ उसे यह निर्णय करा देता है कि इसमें तेरा लाभ वृत्तियाँ कहलाती हैं।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मैं तो आपके इस पथ पर चला गया हूँ जो आपने मुझे वर्णन कराया है। आज मैं राष्ट्रवाद में नहीं जा रहा हूँ। परन्तु विचार क्या है कि ब्रह्म कुत्र पितरजन चाहते क्या हैं, कि महान् बनाना, यह पितर कहलाते हैं। उनकी आज्ञा का पालन करना, इनके विज्ञान के सार्थिक स्वरूप को जानना और उसको क्रिया में लाने का नाम ही एक पितर याग कहलाता है।

पितर याग होना, कहीं वैश्य-याग होना, देखो जहाँ ''परमब्रह्म वृताम् देवाः'' यह भिन्न-भिन्न याग की चर्चाएँ प्रायः वैदिक साहित्य में मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मुझे वर्णन कराते रहते हैं। मैं उन विशेषताओं में तो तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव की आज्ञा का पालन करता हुआ, अपने विचार हम देते चले जा रहे हैं। यजमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके, वह पुरोहित इन क्रियाकलापों का उद्गीत गा रहा है; उद्गीत गाता हुआ यजमान अपने में प्रसन्न हो रहा है। **वेद के पठन-पाठन करने का नाम ब्रह्म-याग है,** जब हम वेद का पठन-पाठन करते हैं, प्रकाश को अपने में लाने का प्रयास करते हैं तो प्रकाश में रत्त रह करके मानव ऊर्ध्वागति बना लेता है अपनी, ऊर्ध्वा में रत्त रहता हुआ इस संसार की प्रतिभा को उड़ान देता है।

मेरे पूज्यपाद गुरुवेद ने कई काल में मुझे यह वर्णन कराया है कि देखो, यहाँ यह पाँचों नित्य क्रियाकलाप में न रह करके मानव समाज एक गुडम्बावाद की वेदी पर रत्त हो गया है। वह गुडम्बावाद क्या कहता है कि न तो दर्शन ही कुछ है, न उपनिवेश ही कुछ है, इस वेद के पठन-पाठन भी बुद्धिमान समाज में तुम्हें एक कृतिका में रत्त कर दिया है। वह धृष्टता कहते हैं, हम कृतिका कहते हैं, कितना अन्तर्द्वन्द्व माना गया है।

याग का स्वरूप और पाखण्ड

वह जो गुडम्बावाद है वह कहते हैं कि हम ही प्रभु हैं, हम ही ईश कहलाते हैं। जब इस प्रकार की घोषणा करते हैं तो धर्म के नामों पर एक

रूढ़ियाँ बन जाती हैं और वह यहीं तक नहीं रहती, गुडम्बावाद में अग्नि प्रचण्ड हो जाती है; रक्तभरी क्रान्तियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। जब बुद्धिमान पुरोहितों के द्वारा जब यह याग जैसे **श्रावणी पर्व पर परम्परागतों से ऋषिकाल से याग होता रहा है,** उस याग में नम्रता है, उस याग में ओजस्विता है, इसलिए पवित्रता है, उसको हमें अपना करके अपने जीवन को ऊँचा बनाना है। आज जब मैं इन वाक्यों पर जाता हूँ तो वह कहते हैं याग को भी एक पाखण्ड कह देते हैं, वह यह कहते हैं, कि याग भी पाखण्ड है, घृत अग्नि में परणित करना यह पाखण्ड कहते हैं।

परन्तु मैं यह कहता हूँ भोले प्राणी! यह वायुमण्डल कैसे पवित्र बनेगा जब घृत को तुम अग्नि में नहीं दोगे, अग्नि के मुखारबिन्दु को पवित्र नहीं बनाओगे, तो यह वायुमण्डल कैसे पवित्र होगा। आधुनिक काल का विज्ञान यह स्वीकार कर रहा है, कुछ ही समय हुआ है समुद्र के तट पर एक वैज्ञानिकों का समूह एकत्रित हुआ और वह यह घोषणा करने वाला है, कि याग होना चाहिए तभी हम इस दूषित- वायुमण्डल को समाप्त कर सकेंगे। भोले प्राणी! तू जो यह कहता है कि अग्नि में घृत को अर्पित करना पाप है तो तू अगर और तगर, चन्दन की समिधा द्वारा इनके हुत के द्वारा तू अगरबत्ती के रूप में अपने यहाँ सुगन्धि क्यों कर रहा है, इसका कोई उत्तर प्राप्त नहीं होता। किसी के द्वारा कोई भी किसी भी रूढ़िवाला, रूढ़ि का आचार्य हो, रूढ़िवादी हो, कोई उत्तर नहीं दे पाता।

जब मैं मुहम्मद के मानने वालों के द्वार पर जाता हूँ, तो वे पिशाच की योनियों में अगले जन्म में प्राप्त होंगे उस सम्बन्ध में तो कुछ नहीं कहूँगा, क्योंकि मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मुझे परिभाषित करते रहते हैं। मैं केवल इतना उच्चारण कर रहा हूँ कि जो दूसरे के प्राणों की रक्षा नहीं कर सकते, तो दूसरे के प्राणों को लेने का भी उन्हें कोई अधिकार नहीं होता, क्योंकि अधिकार उस काल में प्राप्त होता है जब परमात्मा उन्हें यह अधिकार देता है, उस योनि में भेजता है जैसे सिंहराज अधिकार

परमात्मा की एक धरोहर कहलाती है। आत्मा की धरोहर कहलाती है, इसके ऊपर विचार करना चाहिए। वाह रे समाज, नाना रूढ़ियाँ, दूसरे प्राणी को हनन करना पाखण्ड नहीं कहते, यज्ञ करने को पाखण्ड कहते है। व्यभिचार को पाखण्ड नहीं कहता, केवल सुगन्धि को पाखण्ड कहता है, कैसा दुर्भाग्य समाज का आ गया है, कैसा दुर्भाग्य है, उस राष्ट्रवाद का दुर्भाग्य है जो मांसों का पान करना तो प्रिय बतलाता है और जहाँ सुगन्धि का प्रसङ्ग आता है, कर्मकाण्ड का प्रसङ्ग आता है वहाँ रूढ़ि कहा आता है। मैं आश्चर्य में पड़ जाता हूँ, पूज्यपाद गुरुदेव से मैं प्रश्न करता हूँ, पूज्यपाद भी मुझे एक आङ्गन में परणित करा करके शान्त हो जाते हैं। परन्तु विचार में नहीं आ रहा है। आज जब राष्ट्रवाद की वेदी के ऊपर नाना प्रकार की रूढ़ियों की चर्चाएँ मैं श्रवण करता हूँ। मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव को कई काल में कहा है। पूज्यपाद गुरुदेव ने भी यह प्रसङ्ग लिया मैं भी इस वाक्य को लेता हूँ।

चित्रावली और बलि

नाना प्रकार की चित्रावली पूर्वकाल में भी रही हैं, महर्षि भारद्वाज के काल में भी रहीं, रावण के काल में रही हैं, विष्णु के काल में रही हैं, शिव के काल में रही हैं, आज भी वह काल है कि उसमें भी ज्यों की त्यों वह चित्रण प्रणाली है। प्राचीन चित्रण प्रणालियों में जहाँ ऋषि-मुनियों के कर्त्तव्य रहें, वहाँ आधुनिक काल में बलियों की प्रतिभा के चित्र मानव को दर्शित कराए जाते हैं और यह कहा जाता है कि हमारे देश का गौरव है। इसे गौरव कहते हैं, प्राचीन संस्कृति कहते हैं। अरे मानव! तेरे मुखारबिन्दु में अग्नि क्यों नहीं प्रदीप्त हो जाती, जो यह शब्द उच्चारण कर रहा है, तू एक प्राणी को नष्ट कराने को, तू एक बलि की प्रतिभा को ले करके कहीं आङ्गन में पीड़ित कर रहा है।

वैदिक साहित्य में, वेद की प्रतिभा में, कहीं भी ऐसा शब्द नहीं कि किसी की बलि का वर्णन हो। बलि का एक नृत्य आता रहता है,

बलि कहते हैं अपने को समर्पित कर देना। यदि प्रभु को तुम्हें प्राप्त करना है, तो अपने को समर्पित कर देना है, अपने को समर्पित करना ही एक बलि कहलाती है। जैसे हमारे यहाँ वृष्टि प्रारम्भ होती है, वृष्टि का जब प्रारम्भ हुआ तो यह पृथ्वी नाना प्रकार के व्यञ्जनों को जन्म देने वाली बनी है और व्यञ्जनों का जन्म दे करके जब यह पृथ्वी कृति बन गई, वो गौ के बछड़े की बलि हो गई और गौ के बछड़े की बलि कैसे? कृषक अपने गौ के बछड़े ले करके इस पृथ्वी की पर्त को उधेड़ देता है, इसको उधेड़ करके इसमें बीज की स्थापना करता है और उसकी रक्षा करता है और बैल का योगदान रूपी जो प्रसाद है वही अन्न बन करके कृषक के समीप आ जाता है, वही नाना प्रकार का अन्न बन करके उसके समीप आता है। उसको आज का मानव बलि कहता है, जो पामर प्रवृत्ति के याज्ञिक हैं वे भी कहते हैं कि बलि का वर्णन वाजपेयी याग में आता है। अरे भोले! तुझे विचारना है, तुझे अपने जीवन को विचारना है कि यहाँ इस प्रकार का नृत्य नहीं करना है। तुझे तो अपने जीवन प्रतिभा को महान् बनाते हुए जीवन की सार्थकता को अपनाना है, जिससे तेरा राष्ट्र समाज ऊँचा बन जाए।

आज का मानव यह कहता है कि हमारे राष्ट्र में इच्छाओं की ऐसी स्थापना आ जाए, लेकिन जहाँ नाना प्रकार के धर्म हों और परमात्मा के नामों पर बलियाँ, व इसकी दाह हो वह वायुमण्डल को कैसे पवित्र बनाएँगी और कैसे यह मानव समाज ऊँचा बन सकेगा। बहुत पुरातन काल में मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन कराया था, यह परिचय कराने के लिए कहा था कि समाज को ऊँचा बनाना है तो यहाँ एक घोषणा होनी चाहिए। राजा को यह घोषणा करनी चाहिए कि धर्म के नामों पर किसी भी प्रकार का, किसी भी प्राणी का वध नहीं होना चाहिए; क्योंकि धर्म के नाम पर प्राणी का वध होता है रसास्वादन के लिए। देव, देवता तो परम्परा से चले आ रहे हैं, परन्तु धर्म के नामों पर रूढ़ियाँ हैं, जो मानव इन रूढ़ियों में नाना प्रकार के हिंसा करता है, उन रूढ़ियों को

समाप्त कर देना चाहिए। और वैदिकता को ला करके बलि के और समर्पित होने के उन रहस्यों का उद्गीत गाना चाहिए। उन रहस्यों का जब उद्गीत गाता है तो मानव में रजोगुण क्यों आएगा, तमोगुण क्यों आएगा, सतोगुण आता रहेगा और देखो राष्ट्र का समाज पवित्र बनता रहेगा। माताओं का जीवन पवित्रतम बना रहेगा और समाज भी ऊँचा बनेगा। समाज में न तो गुडम्बावाद होना चाहिए। न वहाँ देखो धर्म के नामों पर किसी प्राणी का हनन होना चाहिए। केवल धर्म अपने जगह धर्म रहता है, धर्म को कोई भी अधर्म के रूप में नहीं ला सकता। धर्म का अभाव नहीं होता, अधर्म का सदैव अभाव हो जाता है।

वैदिक ज्ञान ऋषि मुनियों की धरोहर

मैं श्रावणी पर्व के पवित्र दिवस आज दृष्टिपात कर रहा हूँ। इस दिवस को मैं परम्परागतों से स्वीकार करता रहता हूँ। यह वह दिवस है जिस दिवस में परमात्मा की पवित्र विद्या जो वैदिक ज्ञान है उस वैदिक मन्त्रात्माओं के लिए साकल्य ले करके, साकल्य यजमान के शब्दों पर, होताओं के, उद्गाता उद्गीत गाने वालों के शब्दों पर, साकल्य विद्यमान हो करके वायुमण्डल के अशुद्ध परमाणु को निगलता रहता है। मेरा अन्तर्हृदय यह ऋषि-मुनियों की धरोहर है **यह जो याग जैसा कर्म है यह ऋषि मुनियों की धरोहर है** क्योंकि ऋषि मुनि अपने आश्रम को पवित्र बनाने के लिए शुद्ध पवित्र वेद मन्त्रों के द्वारा उद्गीत गाते रहे हैं।

अपने पूज्यपाद गुरुदेव से मैं विशेष में भी चर्चा करना नहीं चाहता हूँ, उद्गीत गाने के लिए, जो मैं गाता ही रहूँगा, एक-एक वाक्य के ऊपर टिप्पणियाँ करता ही रहूँगा, अपना विचार देता रहूँगा। परन्तु इस राष्ट्र के राजा को चाहिए अपनी संस्कृति को लाना है तो उन चित्रावलियों पर यज्ञ होते हुए, पुरोहितजनों को उपदेश देते हुए वेद मन्त्रों का चलन करे। राजा ही अपने-अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहता है, यदि विज्ञान के ऊपर अपने को ऊँचा बनाना चाहता है, विज्ञान को अपने में प्रतिज्ञा करना

चाहता है, तो उसे चाहिए कि चित्रावलियों में वेद ध्वनियाँ हों, पवित्र ध्वनि होनी चाहिएँ, जिसमें वायुमण्डल मानव के विचार के साथ पवित्र बन जाए। पुरातन काल में भी इस प्रकार की चित्रावलियाँ थीं। जहाँ, चित्रों का दर्शन होता रहता था। उन चित्रावलियों को वहाँ पर जितने भी दृष्टिपात करते थे वह अहा कह करके वायुमण्डल उनकी वाणी से और परमाणुवाद से साकल्य से ऊँचा बनता रहता था। मेरा तो एक ही मन्तव्य रहता है कि यह समाज कहाँ तक अपने स्वार्थ, स्वार्थपरता में द्रव्य की लोलुपता में, कहाँ चला आ रहा है।

ऋषि की कामना

मैं यह कहता हूँ हे परमात्मन्! तुम वेद सर्वज्ञ हो, तुम प्रकाश सर्वज्ञ हो, हे यजमान्! तुम मानव के यजमान् हो। तुम यजमानों की इच्छाओं को पूर्ण करने वाले हो। हे प्रभु! तुम्हारा अन्तर्जगत् है यह कैसी महान् और पवित्र है। मेरी यह कामना है भगवन् कि वह कौन-सा समय आएगा मेरे समीप जब राष्ट्र अपने राज्य में यह घोषणा करेगा कि मेरे राष्ट्र में धर्म के नामों पर कोई भी प्राणी का हनन नहीं होगा, बलि तो होंगी, परन्तु प्राण नहीं लिए जाएँगे। वह पुरुषार्थ रूपी बलि मेरे राष्ट्र में कब आएगी प्रभु!

हे भगवन्! मेरी तो यह कामना रहती है कि आप भगवन् देखो उद्बुद्ध करने वाले आप महान् हैं, पवित्र हैं, सखा हैं, यज्ञमयी स्वरूप हैं। मानव के अन्तर्हृदय को पवित्र बनाने वाले मेरे प्यारे! यजमान के, यजमान सपत्नीक उनके हृदयों को पवित्र बनाते रहते हो। आज मेरी यह मनोकामना रहती है, यजमान के साथ हे याज्ञिक यजमान! तुम बहुत ऊँचा क्रियाकलाप कर रहे हो, अपनी शुद्ध पवित्र वाणी से साकल्य के द्वारा तुम्हारी आहुति वायुमण्डल लोक-लोकान्तरों में जा रही है। पूर्णरूपेण तो नहीं जा पातीं, परन्तु प्रत्येक दिन उनमें से कुछ आहुति तो चली ही जाएँगी। मन विचलित होता है तो इसको भी विशुद्ध रूप में लाया जा सकता है।

वेद अपने में सर्वत्रता में परणित रहता है। हे यजमान! मेरा तो हृदय यजमान के साथ रहता है; इनके जीवन का सदैव सौभाग्य अखण्ड बना रहे। महान् और पवित्र क्रियाकलाप करते रहें। अपने जीवन में महानता की ज्योति बिखेरते रहें। इसके साथ मैं अपने वाक्यों को पूर्ण विराम देने जा रहा हूँ। पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा।

पूज्यपाद-गुरुदेव

मेरे प्यारे ऋषिवर! मेरे प्यारे महानन्द जी ने अभी-अभी अपने ओजस्वी विचार दिए। परन्तु आज का इनका विचार दर्शनों से गुथा हुआ विचार था। **जो मानवीय दर्शनों से गुथा हुआ विचार है वह वास्तव में होना चाहिए** क्योंकि मानव को वास्तव में अपने जीवन में अपनी धारा को ऊँचा बनाना हैं। प्रत्येक मानव को उस यज्ञमयी स्वरूप में रत्त रहना है जिस यज्ञोमयी ''श्रोत्रं ब्रह्म वाचो'' में रह करके अपनी मानवीय धारा को ऊँचा बनाता है। मेरे पुत्र ने अभी-अभी यजमान के सम्बन्ध में कुछ उद्गीत, उद्गार दिए, मेरा अन्तर्हृदय भी सदैव उनसे यह कहता रहता है कि ''आचारं ब्रह्म'' **आचार सँहिता पवित्र बनाते हुए हे यजमान! तू अपने जीवन को ऊँचा बना।** यह है आज का वाक्। आज का वाक्य समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

वेद पाठ .....

महर्षि महानन्द जी–अच्छा भगवन्!

पूज्यपाद गुरुदेव–आनन्द मंगलाचार! शान्तिः।

दिनाँक : 30 अगस्त, 1985 (रक्षाबन्धन)
समय : दोपहर 1:00 बजे
स्थान : लाक्षागृह, बरनावा

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. जब मानव संसार में आता है तो कामधेनु को प्राप्त करने के लिए आता है।
2. कामधेनु को प्राप्त कर मानव जीवन का कल्याण हो जाता है।
3. कामधेनु नाम ही यह सरस्वती है, कामधेनु नाम ही यह गायत्री है।
4. जब करोड़ों गायत्रियों का गान किया जाता है तो उससे अमृत धारा प्राप्त हो जाती है।
5. जिस काल में हिंसा नहीं होती, जिस काल में दूसरों के गर्भ को आहार नहीं किया जाता, उस काल को सतोयुग कहा जाता है।
6. कोई भी राष्ट्र का पालन जब कर सकता है जब उसके द्वारा त्याग और आत्मिक ज्ञान होगा।
7. मानव का जीवन अनुसन्धान है।
8. वेद वाणी को आत्मा का ज्ञान कहते हैं, इसमें उदारता और विराजमान है।
9. जिनका जीवन अग्ने हो उसके वचनों का पान करते हुए अपने जीवन को अग्ने बना लेना चाहिए।
10. ब्रह्मा नाम परमात्मा का है।
11. वेद नाम प्रकाश का है
12. वेद वह प्रकाश है जो मानव के अन्तःकरण के अन्धकार को नष्ट करता है।
13. प्रत्येक वेद मन्त्र ओ३म् रूपी धागे से पिरोया हुआ है।
14. जितनी संसार की भाषाएँ हैं वे सब वेद मन्त्रों से सम्बन्धित हैं।
15. जब मानव को ज्ञान हो जाता है तो मानव की उच्च दशा हो जाती है।
16. जो आत्माएँ मोक्ष के निकट होती हैं उनमें वेदों का ज्ञान ओत-प्रोत रहता है।

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	110.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	110.00
*3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	120.00
*4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	110.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	110.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	100.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	30.00
8.	आत्म-लोक	45.00
*9.	धर्म का मर्म	50.00
10.	शंका-निवारण	40.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व	50.00
12.	आत्मा व योग-साधना	40.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	150.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	150.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	140.00
17.	रामायण के रहस्य	45.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	50.00
19.	महाभारत के रहस्य	35.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	45.00
21.	रावण-इतिहास	65.00
22.	महाराजा-रघु का याग	35.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	40.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	40.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	45.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	40.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	45.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	50.00
29.	याग-मन्जूषा	45.00
30.	आत्म-दर्शन	35.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	40.00
32.	याग और तपस्या	70.00
33.	यागमयी-साधना	45.00
34.	यागमयी-सृष्टि	40.00
35.	याग-चयन	50.00
36.	दिव्य-रामकथा	150.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	50.00
38.	दिव्य-ज्ञान	45.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	140.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	45.00
41.	आत्म-उत्थान	45.00
*42.	तप का महत्त्व	45.00
43.	अध्यात्मवाद	45.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	45.00
45.	वैदिक-प्रभा	40.00
46.	प्रकाश की ओर	40.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	45.00
48.	वैदिक-विज्ञान	40.00
49.	धर्म से जीवन	40.00
50.	आत्मा का भोजन	45.00
51.	साधना	40.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	45.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	45.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	110.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	50.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	110.00
57.	माता मदालसा	60.00
*58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	110.00
*59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	110.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	110.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	110.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	110.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	110.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएँ	60.00
65.	प्रभु-दर्शन	60.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	110.00
*67.	समाज उत्थान का मार्ग	60.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	110.00
*69.	ब्रह्म की ओर	60.00
*70.	ईश्वर मिलन	60.00
*71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	110.00
*72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	110.00
*73.	नैतिक शिक्षा	60.00
*74.	यौगिक प्रवचन माला भाग-17	110.00
*75.	आत्मिक ज्ञान	60.00
*76.	यौगिक प्रवचन माला भाग-18	120.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध है–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं 09719622950
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, ए-59 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
5. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
6. श्री अनिल त्यागी सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4165802
7. श्री आशीष त्यागी, सुपुत्र श्री सुशील त्यागी डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4202763
8. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
9. श्री शमीक त्यागी, 16ए, आलोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड़, (उ.प्र.)।
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
11. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
12. श्री पवन त्यागी सुपुत्र श्री राजाराम त्यागी, मौ. खड़खड़ियान, माता, ग्राम खरखौदा, जिला मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 7536097171
13. श्री प्रदीप त्यागी सुपुत्र श्री महेश त्यागी, रघुनिवास 138 सर्वोदय कालोनी, मेरठ रोड़, हापुड़ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9758330473
14. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे. पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
15. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09313530505
16. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
17. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

सु. कुमारी नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली – स्मृति–श्रीमति शान्ति अबरोल व श्री देवराज अबरोल	1001 रुपये
श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री चिंतामणि त्यागी एवं श्री जगमोहन त्यागी बरला, मुजफ्फरनगर	1000 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री ज्ञानेश द्विवेदी	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	1000 रुपये
श्री संजय उर्फ टीटू त्यागी सुपुत्र श्री ओमदत्त त्यागी, तलहटा	600 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	250 रुपये
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल	201 रुपये
श्री कर्ण तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
श्रीमती रुचिका तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
श्री अरुण तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
श्रीमती सुखमणी तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज दिल्ली	101 रुपये
कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये

मासिक सहयोग का आह्वान

सभी श्रद्धालु एवम् उदार दानदाताओं के सहयोग से समिति के प्रकाशन का कार्य निरन्तर उर्ध्वा गति को प्राप्त हो रहा है उसी सहयोग की गरिमा को सुदृढ़ रूप से चिरस्थायी बनाए रखने के लिए आपका अनुदान निरन्तर प्राप्त होता रहे ऐसी आप सभी से समिति विनम्र भाव से प्रार्थना करती है और नए मासिक सहयोगियों को भी अपनी आहुति इस जनकल्याण के कार्य में प्रदान करने की अपेक्षा करती है। **वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस अन्तरात्मा को जानने का प्रयास करें। हम आत्मवेता बन करके अपनी मानवीय धारा में ऊँचा बन जाएँ। यह न सूर्य है न चन्द्रमा है न तारामण्डल है, न अग्नि है, न शब्द है। भगवन्! प्रकाश के देने वाला आत्मा है। आत्मा के कारण ही मानव का शरीर क्रियाशील बना रहता है। तो इसीलिए प्रत्येक मानव को आत्मा को जानना चाहिए आत्मवेत्ता बनने के लिए, आत्मचेतना में ही रत्त रहना चाहिए। क्योंकि जो हमारे शरीरों में भास रहा है, प्रकाशक बना हुआ है, उस प्रकाश को जानने के, प्रकाश से प्रकाशित होना चाहिए। यह कैसा अद्‌भुत जगत है, इसके ऊपर विचारना है बहुत गम्भीरता से मनन करना है। क्योंकि मनन करने वाला यह ब्रह्माण्ड है, प्रभु की जो रचना है वह बड़ी अद्‌भुत है। इसीलिए प्रभु का गुणगान गाना हमारे लिए अनिवार्य है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 47 : अंक : 561
जून 2019

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R. No. DL (S)-01/3220/2018-2020
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-06-2019
Published on 5th day of the same month